अध्याय- 7

मॉरीशस को एकांको म इतिहास और सामाजिक सरोकार :

मॉरीशस म एकांको मंचन इतिहास काफो पुराना है। रामलीला, रासलीला आदि एकांको का खुले म मंचन होता रहा लेकिन पारसी थियेटर के आगमन से नाटक मंचन परम्परा म एक नया बदलाव आ गया। अभिमन्यु अनत का सन1954 म 'पारिवतन' एकांको विधा का आरंभ किया| उसका रेडियो- प्रसारण तथा टी.वी प्रस्तुति को दृष्टि से श्री ब्रजद्र कुमार भगत 'मधुकर' को सन 1951 म प्रकाशित एकांको 'पुष्प' है। यह सामाजिक एकांको है। रेडियो तथा मंचन दोनों म प्रस्तुतिकरण भी हो चुका है।

एकांको के विकास को दो भागों म विभाजित किया है-

1. स्वतंत्रता से पूव (1951-1968)

2. स्वातंत्र्योत्तर काल को एकांको (1968 से अब तक)

1. **स्वतंत्रता से पूव**

इस युग म ब्रजद्र कुमार भगत 'मधुकर' के दो एकांको का प्रकाशन हआ। 1. आदश बेटी (1951) 2. स्वतंत्रता का सुप्रभात (1953)

'आदश बेटी' एकांको म कुल चार दृश्य है पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाली एकांको है। भाव संप्रेषण को दृष्टि से एक-एक गीत को भी रखा गया है। जिससे कथा का विकास भावात्मक हो सके। दूसरी एकांको 'नवजीवन' है। इस एकांको म कुल तीन दृश्य है। भाषा, शिक्षा और संस्कृति म टकराव को कहानी है, हिंदी और अंग्रेजी मिश्रित एकांको है। हिंदी को हेय समझने वाले कहते ह अगर दुनिया म कोई अच्छी भाषा है तो वह फ्रेंच है ऐसे कहते हए माइकल पूरी तरह से पाश्चात्य भाषा और संस्कृति के रंग म रंगा हआ है।

स्वतंत्रता का सुप्रभात (1953)-

ब्रजद्र मधुकर जी का दूसरा एकांको संग्रह है। इस संग्रह म कुल छ: एकांकियां है- 'स्वतंत्रता का सुप्रभात', 'तीस जनवरी', 'कला और पुजारी', 'अमर ज्योति', 'जाह्नवी गंगे', 'कैलाशपति शंकर' आदि।

'तीस जनवरी' म गांधी को हत्या को कथा का विषय बनाया है। 'कला और पूजारी' म संगीत को कला को प्रतिष्ठा को गई। 'अमर ज्योति' दिपावली के समय होने वाले प्रकाश कैसे जीवन को प्रकाशित करता है, उस पक्ष को एकांको म अभिव्यक्त किया है। 'जाह्नवी गंगे' मंचन को द्रष्टि से प्रभावकारी एकांको है। गंगे का किति गायन किया गया है जब रेडियो पर ध्वनि–संगीत के आरोह-अवरोह से और भी प्रभावपूण हो गया है। 'कैलाश पति शंकर' म भारत के पौराणिक ऐश्वय को प्रस्तुत किया है।

2.स्वातंत्र्योत्तर युगीन एकांकी-

स्वातनत्र्योत्तर युगीन एकांकी म रेडियो और टी.वी की प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

'पांच एकांकी का सपना' (1972) श्री ठाकुरदत्त पांडेय ने पांच एकांकीयों के संग्रह म 'दीपक', 'कलियुग', 'सिविल', 'मेरिज', 'बुझ गया दीपक', 'एक सपना' आदि संकलित की है, 'अनोखे अतिथि' (1974) श्री हीरालाल लीलाधर के दो एकांकियो 'अनोखे अतिथि' तथा 'असहाय का सहारा' है। अनोखे अतिथि म रामचरित मानस की शबरी के माध्यम से सामयिक समस्या को उद्घाटित किया है। 'असहाय का सहारा' एकांकी म मजदूरों के साथ हो रहे शोषण को रेखांकित किया है।

महेश रामजियावन द्वारा संकलित 'सात रंग एकांकी' प्रकाशित हई।

अभिमन्यु अनत की 'महामारी' ऐतिहासिक एकांकी है। इतिहास का दद अभिव्यक्त हआ है। "म खुद इतिहास हं। इस मिट्टी के डेढ़ सौ साल का इतिहास, उसकी परछाई हं.... म तो द्वीप के खेतों की हर चप्पे पर मंडराती रहंगी मुडिया पहाड़ से लेकर परी तालाब तक ग्री-ग्री के प्रलंयकार लहरों से लेकर कोटेज गांव के हत्याकांड तक, म ही हं। म ही अंजली हं। म इतिहास नहीं, पर कहानी की एक झलक दिखा सकती हं।" (1)

दलाल मजदूरों कैसे सौदा कर देते थे। जबारन बह-बेटियों को मालिक के यहां लेकर जाते थे। एकांकी म एक पागल नामका पात्र है वह कहता है- "आप सही कह रहे ह, मेरे मालिक जमीन आपकी है, पैसे आपके ह, देश की सुंदर हकूमत आपकी है, कानून आपका है। सिपाही आपके ह, देश की सुंदर औरत आप की है। सभी सुंदर कुदरती मंजरे आपकी है। सभी बंगले आपके है। सभी ताकत आपकी है। इस मुल्के चारों ओर समंदर ही समंदर है। ये सांवले गुलाम जायगे कहां? भागगे कहां? ये घुम- फिर कर आप ही के चरणों पर माथा टेकगे, ठीक उसी तरह जिस तरह म टेकता हं।" (2) मॉरीशस के मजदूरों की एकांकीयों म 'मूंछवाली', 'ढहता हआ मकान' म सम सामयिक समस्याओं को उजागर करने वाली एकांकी है। भानुमती नागदान की 'जिज्ञासा' 'बजट एकांकी म भी सामाजिक समस्याओं को प्रकाशित किया है। श्री कृष्णलाल बिहारी की 'भारतपुत्री' तत्कालीन परिस्थितियों को उजागर करती हई - एकांकी है।

मुनीश्वरलाल चिंतामणि की एकांकी 'हम एक है', 'सोने का हिरन', 'बड़े घरा की बेटी' आदि एकांकी है। 'प्रेमज्योति' राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करने वाली एकांकी है। महेश राम जियावन की 'अब और नहीं' एक सामाजिक एकांकी है। 'प्रभु द्वारे' और 'एक मुट्ठी मौत' व्यंग्य प्रधान एकांकी है। महेश राम जियावन की सभी रचनाओं का मंचन भी सरलता से किया जा सकता है। सोमदत्त बखौरी की 'सीता स्वयंवर' तथा ' पांडव वनवास' का स्कूलों म भी मंचन हआ था। 'बह' और 'वसंत बहार' मानव मूल्यों को उद्घाटित करती है।

रामदेव धुरंधर की 'इतिहास का दद' ऐतिहासिक एकांकी है मॉरीशस म तूफान के थमने के बाद मजदूरों को अनाज तक नहीं मिलता है, ऐसी शोषण करनेवाली व्यवस्था के खिलाफ की एकांकी है।

'घन चक्कर' श्री हिरालाल लीलाधर को एकांको है। ज्ञानेश्वर रघुवीर को 'मसीहा हर बार मरेगा' और 'तथास्तु' महत्वपूण एकांको है।

'घननारायण जीऊत को 'मुझे कुने ने काटा' व्यंग्य प्रधान एकांको है भाषा के प्रति व्यार और संस्कृति को रक्षा हेतु महत्वपूण है।

धनराज शंभू- 'प्रतीक्षा एक नई सुबह को' मानव मूल्यों के टकराव को एकांको है मधुकर को 'प्रतीक्षा' ऐतिहासिक एकांको है। केशली कुमारी को 'शराबी को बह' एक सामाजिक एकांको है।

मॉरीशस म एकांको का रेडियो से आरंभ हआ टी.वी म भी प्रस्तुति हई और 'वसंत' पत्रिका का एकांको को विकास यात्रा म बहत बडा योगदान रहा है।

- **मॉरीशस म हिंदी निबंध को यात्रा-**

निबंध को शुरुआत सन 1909 म 'हिंदुस्तानी' पत्रिका के माध्यम से हई। हिंदुस्तानी पत्रिका के अतिरिक्त मॉरीशस आय पत्रिका (1911), मॉरीशस इंडियन टाइम्स (1920) मॉरीशस मित्र (1924) इन पत्रिकाओं म सामाजिक-धामिक लेख छपते थे।

पं. आत्माराम विश्वनाथ के लेख जन जागृति के लिए प्रेरणादायक होते थे पं. काशीनाथ किश्तों के अनेक लेख (आयवीर) से निकलते थे। स्त्री शिक्षा, वैदिक धम, हिंदी भाषा, वण व्यवस्था, श्रम का महत्व, दयानंद सरस्वती के विचार आदि विषयों को लेकर लेख प्रकाशित होते थे।

सनातन धमाक (1933-1942) म निबंध प्रकाशित होते थे। 'मासिक चिट्ठी', सैनिक, जमाना, जनता, आर्योदय, वतमान, मजदूर आदि धम और समाज से संबंधित लेख प्रकाशित होते थे। 50 के दशक म पं. वासुदेव विष्णुदयाल ने अनेक लेख लिखे जो राजनीतिक उथलपुथल के लिए एक नई दिशा प्रदान कर रहे थे।

पं. वासुदेव विष्णुदयाल का निबंध विधा म महत्वपूण योगदान मॉरीशस म पं. वासुदेव के माध्यम से ही निबंध को शुरुआत हई। धम, संस्कृति और भाषा के प्रचार हेतु अपने व्याख्यान दिए। व्याकरण को संस्था को तरह स्वयं प्रतिष्ठित थे। अधिकतर निबंधों के विषय धम, दशन, आध्यात्म, इतिहास, रामायण, महाभारत और समाज और संस्कृति आदि विषयों पर निबंध लिखे। पं. वासुदेव विष्णुदयाल के निबंध संग्रह-

1. कुछ महत्वपूण ग्रंथ -1956

2. विष्णुदयाल रचनावली - 1959

3. विष्णुदयाल लेखावली- (दो भाग) 1965

4. वेद भगवान बोले- 1978

5. गीता का अद्भूत संदेश- 1978

6. वेद के अनुपम विचार- 1980

श्री प्रसाद गणपत का 'जीवन प्रदीप' 1966 म कुल 14 निबंध लिखे ह । साहित्य से अधिक तत्कालीन समय को ध्यान म रखकर लिखे गये।

स्वातंत्र्योतर काल का निबंध साहित्य। (1968 से अबतक)

गांधी स्मृति (1969) म हिंदी लेखक संघ द्वारा प्रस्तुत कुल 17 निबंधकारों के कुल निबंधों का संकलन हआ है।

निबंध

पंडित ठाकुर प्रसाद मिश्र जी का 'हिंदु धम का उद्भव' 1969 निबंध संग्रह प्रकाशित हआ। उसम चार निबंधों का संग्रह है। आचाय राममणि त्रिपाठी के निबंध-संग्रह 'दिव्य दृष्टि' (1971) म कुल 25 निबंध संग्रहित है। श्री शिवलाल मोती का 'मोती निबंध माला' (1972) म कुल बीस निबंध संग्रहित है। डॉ. मुनीश्वर लाल चिंतामणि का 'मॉरीशस का हिंदी साहित्य है। जैसे कि – मॉरीशस म हिंदी का विकास, मॉरीशस म भारतीय संस्कृति, स्व. रामताल मंगर भगत आदि। डॉ. के. हजारी सिंह का 'चिरंतर जीवनमूल्य' (1978) अंग्रेजी म प्रकाशित हए फिर हिंदी म प्रकाशित हए। अनुवादित रचना म 22 जितने निबंध संग्रहित है। अधिकतर टैगोर, गांधीजी, आदि के चारित्रिक निबंध है। श्री. बी. सोनू का 'त्रिवेणी से परी तालाब तक' (1978) म निबंध संग्रह प्रकाशित हए। हेमराज के सुंदर 'ग्रेडेड हिंदी ऐसेज' (1982) का प्रकाशन किया। अभिमन्यु अनत का निबंध संग्रह म चार लेखों और निबंधों का संग्रह हआ है। प्रमुख निबंधों म उपभोक्ता संस्कृति अब गांवों म, प्रेमचंद और भारतीय उपन्यासो म भारतीयता, देशी भाषाओं के विरुद्ध साम्राज्यवादी षड़यंत्र, भारत कब तक हिंदी बोलेगा आदि। श्री प्रहलाद रामशरण का भी महत्वपूण योगदान है। "निबंध लिखने का मेरा शौक अत्यंत पुराना है। वर्षों पहले 'समाजवाद' नामक साप्ताहिक पत्र हिंदी म निकलता था। स्वर्गीय सुंदरजी उसका संपादन करते थे। उसी पत्र न मेरा प्रथम निबंध छपा था। वह अपोलो आठ को अंतरिक्ष उड़ान के सम्बंध म था। तब से अब तक मेरे सैकड़ों निबंध विविध विषयों पर 'आर्यादय' से लेकर 'आजकल' और 'साप्ताहिक हिंदुस्तान, तक म छपे आये ह। (3)

➢ स्वातंत्र्योत्तर पत्र-पत्रिका म निबंध-

मॉरीशस म अनुराग (1969), आभा (1972), दपण (1973), वसंत (1978), इंद्रधनुष (1988) इन प्रमुख पत्रिकाओं म निबंध प्रकाशित होते रहे है।

‘वसंत’ पत्रिका 1978 से अब तक

इंद्रधनुष 1988 से अब तक

मॉरीशस म हिंदी का भविष्य इंद्रभूषण प्रसाद, मॉरीशस का हिंदी साहित्य- मुनीश्वरलाल चिंतामणि, मॉरीशस म हिंदी का स्थिति- एक परिचय, दयानंद वसंतराय आदि।

‘वसंत पत्रिका’ म हिंदी भाषा, साहित्य तथा विसंस्कृतिकरण का स्थितियों को लेकर व्यंग्य साहित्य अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, पूजानंद नेता आदि के निबंधों म देखा जा सकता है। ‘वसंत’ पत्रिका के एक अंक का प्रतियां ही जला दी गई जब उसम ‘हिंदी का गरदन पर ये खूनी पंजे किसके ह, आया कुछ अंश देखा जा सकता है –“इस आजाद मुल्क म आज हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ जो व्यभिचार हो रहा है, उसका वजह औपनिवेशक हस्तियों का धामिक शक्ति है या हमारे नेताओं का ओर से विश्वासघात? या वह हमारी ही कमजोरियों का नाजयज फायदा है, जो हमारा अहित चाहनेवाले आज उठा रहे ह.... जब यहां के अंग्रेजी फ्रेंच के ठेकेदार पूंजीपतियों ने आजादी के खिलाफ जेहाद शुरु किया था, उस समय गांव का बैठक-बैठक से, ईरव के खेतों के चप्पे-चप्पे से स्वतंत्रता का आहवान हआ था। आम आदमी का उस निश्चल अभिव्यक्ति का जीत हई थी। यह दावा भी सिफ हिंदी का ही हो सकता है कि अगर लोग मंगी और महामंगी का कुसियों पर शोभित है, तो उसी हिंदी के वोटों से आज उन्हों ओहदों का भारत भरकम बोझ के नीचे हिंदी सांसों के लिए छटपटा रही है हिन्दी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का अपमान हआ है, उससे भी यह प्रतीत होता है, कि इस देश म सरकार नाम का कोई चीज अब है ही नहीं अगर हई भी तो नपुसंकता को पहंची हई। अन्यथा यह देश गिरजा घर का डांट-डपट से आत्म समपण न कर जता मगर यही रवैया रहा, तो कल हकुमत गिरजा घर का होगी।“(4)

‘वसंत’ पत्रिका म अनेक लेखकों के लेख प्रकाशित हए। लेकिन सवाधिक योगदान अभिमन्यु अनत का रहा है इसके अलावा रामदेव धुरंधर, पूजानंद नेमा, डॉ. मुनीश्वर चिंतामणि, पं. ठाकुरदत्त पांडेय, उदयनारायण गंगू, डॉ. वीरसेन जागासिंह, डॉ. राजद्र अरुण, राजपाल सिंह, गंगादत्त शमा, नारायणदत्त दसोई, इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, डॉ. लक्ष्मीप्रसाद, के. हजारी सिंह, धनराज शम्भू, आदि। मुकेश जी बोध के व्यंग्यपरक लेखों व निबंधों का अपना ही एक महत्व है। ‘इंद्रधनुष’ पत्रिका का योगदान भी सराहनीय है।

आधुनिक युग म भी पत्र-पत्रिकाओं म निबंध व लेख प्रकाशित हो रहे है।

- **<u>जीवनी साहित्य:</u>**

श्री गंगादत्त का मन है –“ मॉरीशस म हिंदी –लेखन जीवनी और निबंध-इन्हों दो विधाओं से प्रारंभ हआ तब हिंदू-समाज शक्ति-संचय के लिए एक संस्कृति का आश्रय खोज रहा था पहली इच्छा का पूति के लिए जीवनी तथा दूसरी के लिए निबंध ही उपयुक्त विधाएं थी।“ (5)

मॉरीशस के प्रथम जीवनीकार पं. आत्माराम विश्वनाथ थे। अपने जीवनी नायक मणिलाल डॉ. को 'रिजनरेटर ऑफ मॉरीशस ' डॉक्टर की योग्यता, मॉरीशस आगमन और उनके काय पर पं. आत्माराम ने लिखा, उनका लेखन-काय बड़ा ही विस्तृत था। 1928 म 'छत्रपति शिवाजी तथा लक्ष्मीबाई की जीवनियां' लिखी।

मॉरीशस म जीवनी साहित्य दो तरह से देखा जाय-

1. स्वतंत्रता पूव (1921 से 1968 तक)

2. स्वातंत्र्योतर युग (1968 से अब तक)

1. स्वतंत्रता पूव जीवनी साहित्य-

पं. आत्माराम विश्वनाथ की 'मॉरीशस के भारतीयों म नवजीवन का प्रादुभाव (1921-22 रानी लक्ष्मीबाई (1928) तथा 'छत्रपति शिवाजी' (1928) आदि। मणिलाल कनैया ठाकुर, श्री हिरालाल गुप्त, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल आदि लेखकों ने भी लेखन काय किया

प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल ने जीवनी संबंधित चार पुस्तक लिखी। 'महात्मा और संत'(1955) और गांधी और विनोबा भावे के जीवन प्रसंगों को लेकर लिखी गई। 1960 म पं. मदन मोहन मालवीय की जीवनी लिखी। इसके अलावा दाशनिकों, समाज सुधारकों, भगवान बुद्ध पाल एंड विर्जीनी, मैक्समूलर, स्वामी शंकराचाय आदि के जीवन के महत्वपूण प्रसंगों को प्रकाशित किया। डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर' लिखी।

2. स्वातंत्र्योतर जीवनी साहित्य (1968 से अब तक)

डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने मॉरीशस म एक नया जोश पैदा किया था। देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए पूरा योगदान दिया था। स्वतंत्रता के बाद उनके जीवन को आधार बनाकर अनेक लेखकों ने लिखा। मॉरीशस हिंदी लेखक संघ द्वारा 'गांधी स्मृति' (1969) म गांधी के सिद्धांत, विद्यार्थी जीवन, दक्षिण अफ्रीका, विवाह अहिंसा, नारी-शिक्षा, अछूतो द्वारा, मॉरीशस म आगमन, भारतवंशीयों को संदेश आदि अलग-अलग प्रसंगों को लेकर लिखा गया। डॉ. शिवसागर रामगुलाब (1969) म श्री टेकलाल गणेश जी ने लिखा और श्री कृष्णा जी शमा ने 'डॉ. शिवसागर रामगुलाम' (1969), पं. रामलगन शिवगोविंद शमा ने 'नये मॉरीशस के निमाता' (1975), पं. वासुदेव विष्णुदयाल के द्वारा 'मॉरिशसीय जन सेवक सुखदेव विष्णुदयाल' (1979) सुखदेव विष्णुदयाल के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वणन हआ है। सुरेश रामबरन ने 'काशीनाथ रचनावली' (1984) पं. काशीनाथ किर्ती के जीवन और विविध प्रसंगों को लिखा है। अभिमन्यु अनत ने 'जन आंदोलन के प्रेणता: प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल' (1986) का प्रकाशन महात्मा गांधी संस्थान द्वारा प्रकाशित हई। पं. विष्णुदयाल के जीवन आधारित दूसरी जीवनियां भी आई लेकिन इस जीवनी की उत्कृष्ट भाषा-शैली का उदाहरण देखा जा सकता है- 'विसंस्कृति करण के दौर म युवा पीढ़ी दिग्भ्रान्त सी मरी हई मछली की तरह, संस्कृति हीनता और धम-परिवतन की पाठ म बह जाने की स्थिति म पहंच चुकी थी। वक्त के तकाजे पर प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल ने मॉरीशस के हर शहर, हर गांव के दौरे शुरु किए। अपने प्रवचनों, अपनी रचनाओं और अपने ग्रंथों से जन-मानस को वह शक्ति प्रदान करनी शुरु की,

जिससे उनम अपने को बह जाने से रोक सकने का हिम्मत पैदा हो सका..... कुछ लोग जब तिनकों का तरह लहरों के साथ बह जाने का स्थिति म थे, तो पंडित जी के आह्वानों ने उन्ह साहस दिया लहरों के विरुद्ध तैरकर आगे बठने का' (6)

'मॉरीशस आय समाज के चमकते सितार' (1987) प्रहलाद रामशरण द्वारा लिखा गया। इस जीवनी म शिवसागर रामगुलाम, शिवगुलाम तोरल, अग्निहोत्री, ब्रह्मदत्त नंदलाल, रामलाल गुमानी, सुदेवी भूमा, रामप्रसाद निपूर, झगरू शिव गोविंद, दिवनारायण पदारथ, रामधन पूरण, पं. रामस्वरूप रामलगन, उदयनारायण गंगू, गोपी चिंतामन, प्रभु उदन, प्रहलाद शरण आदि। महानुभावों के जीवन आधारित लिखा गया है। अभिमन्यु जी का इसरा 'मजदूर नेता' रामनारायण' (1988) प्रकाशित हआ। इस म मजदूर नेता श्री हरि प्रसाद रामनारायण के जीवनी लिखी। उदय नारायणजी ने 'मॉरीशस के निमाता: सर शिवसागर रामगुलाम' (1989) लिखी गई।
'वसंत' पत्रिका म सोमदत्त बखौरी का जीवनी प्रकाशित हई। 'इंद्रधनुष' म मणिलाल डॉक्टर, पं. नेहरु तथा डॉ. शिवसागर रामगुलाम आदि जीवनियां' लिखी है। मॉरीशस म स्वतंत्रता से पूव जीवनी-साहित्य पर साहित्यकारों ने कम लिखा है, जब कि स्वातंत्र्योतर युग म जीवनी साहित्य म काफी लिखा गया है।

-:संदभ सूची-:

1. महामारी:वसंत : अभिमन्यु अनत: अंक- 57 वष- दिसम्बर-1987- पृ. 12-13

2. महामारी:वसंत : अभिमन्यु अनत: अंक- 57 वष- दिसम्बर-1987- पृ. 12-13

3. इंद्रधनुष: पत्रिका:पृ. 18

4. वसंत: अभिमन्यु अनत: आत्म विज्ञापन: पृ. 65

5. शिवरात्रि: पत्रिका: श्री गंगादत्त शमा: मॉरीशस म हिन्दी नवलेखन: पृ. 33

6. अभिमन्यु अनत: जनांदोलन के प्रणेता- प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल: पृ. 9